ख़लील जिब्रान

मसीहा

ख़लील जिब्रान की पुस्तक
'The Prophet' का हिन्दी अनुवाद

ख़लील जिब्रान

मसीहा

ख़लील जिब्रान की पुस्तक
'The Prophet' का हिन्दी अनुवाद

मसीहा

ख़लील जिब्रान की पुस्तक
'The Prophet' का हिन्दी अनुवाद

ख़लील जिब्रान

राजपाल

अनुवाद
सत्यकाम विद्यालंकार

ISBN : 9788170287643
संस्करण : 2016 © राजपाल एण्ड सन्ज़
हिन्दी अनुवाद © राजपाल एण्ड सन्ज़
MASIHA by Kahlil Gibran
(Hindi edition of *The Prophet*)

राजपाल एण्ड सन्ज़
1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006
फोन: 011-23869812, 23865483, फैक्स: 011-23867791
e-mail : sales@rajpalpublishing.com
www.rajpalpublishing.com

www.facebook.com/rajpalandsons

क्रम

मसीहा

प्रेम

विवाह

भोजन और भोज्य

श्रम का ध्येय

सुख-दु:ख का स्वरूप

घर क्या है?

वस्त्र-परिधान

क्रय-विक्रय

अपराध और दण्ड

विधि-विधान

स्वतन्त्रता और बन्धन

तर्क और आवेश

कष्ट और आनन्द

आत्मज्ञान

शिक्षक

मित्र कौन?

वार्तालाप

समय-विभाजन

अच्छाई और बुराई

प्रार्थना

आनन्द क्या है?

सुंदरता

भक्ति और कर्म
मृत्यु
निवार्ण

मसीहा

अपने देश से बिछ्ड़ने के बाद अलमुस्तफा ने आर्फलीज नगर में अपने जीवन के बारह सुनहरे वसन्त बिता दिए थे।

बारह वर्ष बाद भी उसके दिल में अपने देश की याद और आंखों में देश की ओर वापस जाने वाले जहाज़ की व्याकुल प्रतीक्षा बसी हुई थी।

आखिर बारह साल बाद एक दिन...

इलूल(असौज)महीने की सातवीं तारीख को उसने नगर के परवर्ती पर्वत के शिखर पर चढ़कर देखा, एक जहाज़ समुद्र पर छाए गहरे कुहासे को चीरता उसी ओर बढ़ रहा था।

उस घड़ी अलमुस्तफा के हृदय–कपाट स्वयं खुल गए। मन का उल्लास क्षितिज तक फैले सागर की तरंगों से खेलने लगा, आह्लाद-प्लावित पलकें मन के मौन मन्दिर में प्रभु–चरणों पर झुक गई।

लेकिन पर्वत शिखर से उतरते समय कदम भारी हो गए, मन पर उदासी छा गई।

उसने सोचा :

क्या मैं वियोग की पीड़ा से शून्य ही यहां से विदा हो सकूंगा?

इस नगर में मेरे दिन दु:खों से दुर्वह और रातें एकान्त पीड़ा से अनुतप्त बीती हैं। लेकिन इस अनुताप और एकान्त को छोड़ते हुए मन विह्वल हो रहा है।

इस नगर की वीथियों में मैंने मन के मोती बिखेरे हैं और इन पर्वतों के अंचल में मेरी स्वप्निल आशा–अभिलाषाएं सांस ले रही हैं! विरह–वेदना का अनुभव किए बिना मैं कैसे उनसे विदाई ले सकता हूं!

उन्हें तन के जीर्ण वस्त्र की तरह उतारकर मैं कैसे उनकी याद अलग कर सकता हूं। उनसे बिछ्ड़ते हुए मुझे अनुभव होता है, मानो मैं अपनी देह की त्वचा को देह से अलग कर रहा हूं।

किन्तु अब मैं यहां और ठहर भी नहीं सकता।

अतल समुद्र का आह्वान सबको बुला लेता है; मुझे भी बुला रहा है; मुझे भी जाना ही होगा।

अब यहां जड़वत् स्थिर रहने का अर्थ होगा, बर्फ में स्फटिक बनकर निर्जीव सांचों में